



कमला नेहरू महिला महाविद्यालय
हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका



हिंदी भारती

दिसम्बर - 2017



संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी
डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा
कु. शुभश्री शताब्दी दास



संपादकीय

नव वर्ष की अनेक अनेक शुभकामनाओं के साथ आपके समक्ष “ हिंदी भारती ” का दिसम्बर अंक प्रस्तुत है । यह अंक कोई विषेशांक ना हो कर सहज भावों की सहज अभिव्यक्ति है । इस अंक में जनवरी महीने में आने वाले विश्व हिंदी दिवस, स्वामी विवेकानंद (युवा दिवस) एवं मकर संक्रांति पर विशेष लेख हैं । साथ ही हैं विभाग के छात्राओंकी कच्ची पक्की अभिव्यक्तियां ।

“ हिंदी भारती ” कमला नेहरू महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग को अपनी समग्रता के साथ प्रस्तुत करता है । आपने इसके हर अंक को सराहा है एवं आशा है आगे भी इसी सहृदयता से इसे अपना आशिर्वाद एवं स्नेह देते रहेंगे । विभाग की ओर से आप सब को पुनः

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी










डॉ. मनोरमा मिश्रा



विश्व हिन्दी दिवस

विश्व हिन्दी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसी लिए इस दिन को *विश्व हिन्दी दिवस* के रूप में मनाया जाता है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन शृंखलाएँ

क्रम	तिथि	नगर	देश
१	१०-१४ जनवरी १९७५	नागपुर	 भारत
२	२८-३० अगस्त १९७६	पोर्ट लुई	 मारीशस
३	२८-३० अक्टूबर १९८३	नई दिल्ली	 भारत
४	२-४ दिसम्बर १९९३	पोर्ट लुई	 मारीशस
५	४-८ अप्रैल १९९६	त्रिनिडाड-टोबेगो	 त्रिनिदाद और टोबैगो
६	१४-१८ सितम्बर १९९९	लंदन	 संयुक्त राजशाही
७	५-९ जून २००३	पारामरिबो	 सूरीनाम
८	१३-१५ जुलाई २००७	न्यूयार्क	 संयुक्त राज्य अमेरिका
९	२२-२४ सितम्बर २०१२	जोहांसबर्ग	 दक्षिण अफ्रीका
१०	१०-१२ सितम्बर २०१५	भोपाल	 भारत

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन १० जनवरी से १४ जनवरी १९७५ तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से सम्बन्धित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी उस समय महाराष्ट्र के वित्त, नियोजन व अल्पबचत मन्त्री थे। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था - **वसुधैव कुटुम्बकम्**। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमन्त्री श्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आये एक प्रतिनिधिमण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में ३० देशों के कुल १२२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।^[1] सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

१- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाये।

२- वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।

३- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यन्त विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाये।

दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में २८ अगस्त से ३० अगस्त १९७६ तक चले विश्व इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमन्त्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्री डॉ. कर्ण सिंह के नेतृत्व में २३ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में १७ देशों के १८१ प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में २८ अक्टूबर से ३० अक्टूबर १९८३ तक किया गया। सम्मेलन के लिये बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आये प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल ६,५६६ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आये २६० प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था -

"भारत के सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।"

चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन २ दिसम्बर से ४ दिसम्बर १९९३ तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। १७ साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने सम्हाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गये प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे श्री मधुकर राव चौधरी। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग २०० विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

पाँचवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में। तिथियाँ थीं - ४ अप्रैल से ८ अप्रैल १९९६ और आयोजक संस्था थी त्रिनिदाद की हिन्दी निधि। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक थे हिन्दी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद थे। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिन्दी। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे - हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिन्दी की स्थिति एवं कंप्यूटर युग में हिन्दी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से १७ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के २५७ प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन में १४ सितम्बर से १८ सितम्बर १९९९ तक आयोजित किया गया। यू०के० हिन्दी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम भारतीय भाषा संगम, यॉर्क ने मिलजुल कर इसके लिये राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष थे डॉ. कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ. पद्मेश गुप्त। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - हिन्दी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्यमन्त्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह हिन्दी को राजभाषा बनाये जाने के ५०वें वर्ष में आयोजित किया गया। यही वर्ष सन्त कबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में २१ देशों के ७०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से ३५० और ब्रिटेन से २५० प्रतिनिधि शामिल थे।

सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ सुदूर सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में। तिथियाँ थीं - ५ जून से ९ जून २००३। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक थे श्री जानकीप्रसाद सिंह और इसका केन्द्रीय विषय था - विश्व हिन्दी: नई शताब्दी की चुनौतियाँ। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से २०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें १२ से अधिक देशों के हिन्दी विद्वान व अन्य हिन्दी सेवी सम्मिलित हुए। सम्मेलन का उद्घाटन ५ जून को हुआ था। यह भी एक संयोग ही था कि कुछ दशक पहले इसी दिन सूरीनामी नदी के तट पर भारतवंशियों ने पहला कदम रखा था।

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन १३ जुलाई से १५ जुलाई २००७ तक संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यू यॉर्क में हुआ। इस सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिन्दी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिन्दी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की थी। इसके लिए एक विशेष जालस्थल (वेबसाइट) का निर्माण भी किया गया। इसे प्रभासाक्षी.कॉम के समूह सम्पादक बालेन्दु शर्मा दाधीच के नेतृत्व वाले प्रकोष्ठ ने विकसित किया है।

नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन इसी वर्ष २२ सितम्बर से २४ सितम्बर २०१२ तक, दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में सोमवार को खत्म हो गया। इस सम्मेलन में २२ देशों के ६०० से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग ३०० भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल १२ प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन की घोषणा हो चुकी है। यह 10 से 12 सितंबर तक भोपाल में होगा। दसवें सम्मेलन का मुख्य कथ्य (थीम) है - 'हिन्दी जगत : विस्तार एवं सम्भावनाएँ'।





ज्ञान पंथ कृपाण कै धारा

कहते हैं कि अज्ञानी को दुख नहीं होता, जो ज्ञानी और समझदार होते हैं, दुख उन्हें ही जकड़ता है। आखिर यह दुख है क्या, कुछ खोने का अनुभव या कुछ न होने का अनुभव या फिर सब कुछ पा जाने का अनुभव? हम तो मनचाहा मिल जाने पर भी फफककर रो पड़ते हैं। मनुष्य की एक खूबी है। वह चाहे, तो पुराना से पुराना हो जाए या नया से नया, उस पर कोई बंदिश नहीं। लचीलापन ही उसकी खासियत है। उसके भीतर कितनी आकांक्षाएं-वासनाएं मूच्छित दशा में पड़ी हैं, फिर भी अगर यह मनुष्य समाज और संसार के लिए कुछ सोच रहा है, तो यह बहुत बड़ी बात है। इसका कारण है मानव होने का ज्ञान। वह बुद्धि, जो अच्छे-बुरे का भेद करना सिखाती है। बुद्धि फर्क बताती है और विवेक अच्छाई को चुन लेता है। लेकिन ज्ञानी होने के कारण उसकी सीमा बड़ी हो जाती है, फिर वह ज्ञानी चित्त पूरी दुनिया को अपना कुटुंब समझने लगता है। कुटुंब-भाव का मतलब है चिंता का प्रसारण, स्व का विस्तार। हम जब दूसरों की चिंता से चिंतित और दुख से दुखी होने लगें, तो समझें कि हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। सभी साधकों ने ज्ञान के पंथ को कृपाण की धार पर चलने की तरह देखा है। कवि बोधा प्रेमपंथ को भी इसी तरह देखते हैं- यह प्रेम को पंथ कराल महा तलवार के धार पे धावनो है। ज्ञान का पंथ मन को साधने की कला है। यह ज्ञान का मार्ग परमात्मा को भी निर्गुण निराकार के रूप में देखता है। सच्चा ज्ञानी वह है, जिसे अपना पता होता है, मैं कौन हूं, इसी प्रश्न का तो उत्तर भारतीय आदि ग्रंथों ने ढूंढने का यत्न किया है।

डॉ महेन्द्र मधुकर





मकर संक्रान्ति

कर्क राशि से मकर राशि में सूर्य का संक्रमण

मकर संक्रान्ति हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है। मकर संक्रान्ति पूरे भारत और नेपाल में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। यह त्योहार जनवरी माह के चौदहवें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ता है क्योंकि इसी दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही सूर्य की उत्तरायण गति भी प्रारम्भ होती है। इसलिये इस पर्व को कहीं-कहीं **उत्तरायणी** भी कहते हैं। तमिलनाडु में इसे पोंगल नामक उत्सव के रूप में मनाते हैं जबकि कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में इसे केवल संक्रांति ही कहते हैं।

मकर संक्रान्ति के विविध रूप

यह भारतवर्ष तथा नेपाल के सभी प्रान्तों में अलग-अलग नाम व भाँति-भाँति के रीति-रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है।

विभिन्न नाम भारत में

- **मकर संक्रान्ति** : छत्तीसगढ़, गोआ, ओड़ीसा, हरियाणा, बिहार, झारखण्ड, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, राजस्थान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, और जम्मू
- **ताइ पोंगल, उझवर तिरुनल** : तमिलनाडु
- **उत्तरायण** : गुजरात, उत्तराखण्ड
- **माघी** : हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- **भोगाली बिहु** : असम
- **शिशुर संक्रात** : कश्मीर घाटी
- **खिचड़ी** : उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार
- **पौष संक्रान्ति** : पश्चिम बंगाल
- **मकर संक्रमण** : कर्नाटक

विभिन्न नाम भारत के बाहर

- **बांग्लादेश** : Shakrai/ पौष संक्रान्ति
- **नेपाल** : माघे सङ्क्रान्ति या 'माघी सङ्क्रान्ति' 'खिचड़ी सङ्क्रान्ति'
- **थाईलैण्ड** : सोङ्गकरन
- **लाओस** : पि मा लाओ
- **म्यांमार** : थिङ्ग्यान
- **कम्बोडिया** : मोहा संगक्रान
- **श्री लंका** : पोंगल, उझवर तिरुनल

नेपाल में मकर-संक्रान्ति

नेपाल के सभी प्रान्तों में अलग-अलग नाम व भाँति-भाँति के रीति-रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिये भगवान को धन्यवाद देकर अपनी अनुकम्पा को सदैव लोगों पर बनाये रखने का आशीर्वाद माँगते हैं। इसलिए मकर संक्रान्ति के त्यौहार को फसलों एवं किसानों के त्यौहार के नाम से भी जाना जाता है।

नेपाल में मकर संक्रान्ति को माघे-संक्रान्ति, सूर्योत्तरायण और थारू समुदाय में माघी कहा जाता है। इस दिन नेपाल सरकार सार्वजनिक छुट्टी देती है। थारू समुदाय का यह सबसे प्रमुख त्यौहार है। नेपाल के बाकी समुदाय भी तीर्थस्थल में स्नान करके दान-धर्मादि करते हैं और तिल, घी, शर्करा और कन्दमूल खाकर धूमधाम से मनाते हैं। वे नदियों के संगम पर लाखों की संख्या में नहाने के लिये जाते हैं। तीर्थस्थलों में रुरुधाम (देवघाट) व त्रिवेणी मेला सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है।

भारत में मकर संक्रान्ति

सम्पूर्ण भारत में मकर संक्रान्ति विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। विभिन्न प्रान्तों में इस त्यौहार को मनाने के जितने अधिक रूप प्रचलित हैं उतने किसी अन्य पर्व में नहीं।

हरियाणा और पंजाब में इसे लोहड़ी के रूप में एक दिन पूर्व १३ जनवरी को ही मनाया जाता है। इस दिन अँधेरा होते ही आग जलाकर अग्निदेव की पूजा करते हुए तिल, गुड़, चावल और भुने हुए मक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिलचौली कहा जाता है। इस अवसर पर लोग मूँगफली, तिल की बनी हुई गजक और रेवड़ियाँ आपस में बाँटकर खुशियाँ मनाते हैं। बहुएँ घर-घर जाकर लोकगीत गाकर लोहड़ी माँगती हैं। नई बहू और नवजात बच्चे के लिये लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इसके साथ पारम्परिक मक्के की रोटी और सरसों के साग का आनन्द भी उठाया जाता है।

उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से 'दान का पर्व' है। इलाहाबाद में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर प्रत्येक वर्ष एक माह तक माघ मेला लगता है जिसे माघ मेले के नाम से जाना जाता है। १४ जनवरी से ही इलाहाबाद में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय खर मास के नाम से जाना जाता है। एक समय था जब उत्तर भारत में है। १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक पूरे एक महीने किसी भी अच्छे काम को अंजाम भी नहीं दिया

जाता था। मसलन शादी-ब्याह नहीं किये जाते थे परन्तु अब समय के साथ लोगबाग बदल गये हैं। परन्तु फिर भी ऐसा विश्वास है कि १४ जनवरी यानी मकर संक्रान्ति से पृथ्वी पर अच्छे दिनों की शुरुआत होती है। माघ मेले का पहला स्नान मकर संक्रान्ति से शुरू होकर शिवरात्रि के आखिरी स्नान तक चलता है। संक्रान्ति के दिन स्नान के बाद दान देने की भी परम्परा है। बागेश्वर में बड़ा मेला होता है। वैसे गंगा-स्नान रामेश्वर, चित्रशिला व अन्य स्थानों में भी होते हैं। इस दिन गंगा स्नान करके तिल के मिष्ठान आदि को ब्राह्मणों व पूज्य व्यक्तियों को दान दिया जाता है। इस पर्व पर क्षेत्र में गंगा एवं रामगंगा घाटों पर बड़े-बड़े मेले लगते हैं। समूचे उत्तर प्रदेश में इस व्रत को *खिचड़ी* के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी दान देने का अत्यधिक महत्व होता है।

बिहार में मकर संक्रान्ति को खिचड़ी नाम से जाता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का अपना महत्त्व है।



तिलगुड़

महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएँ अपनी पहली संक्रान्ति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूल नामक हलवे के बाँटने की प्रथा भी है। लोग एक दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं - "लिळ गूळ ध्या आणि गोड गोड बोला" अर्थात् तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो। इस दिन महिलाएँ आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बाँटती हैं।

बंगाल में इस पर्व पर स्नान के पश्चात तिल दान करने की प्रथा है। यहाँ गंगासागर में प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगा जी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। मान्यता यह भी है कि इस दिन यशोदा ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिये व्रत किया था। इस दिन गंगासागर में स्नान-दान के लिये

लाखों लोगों की भीड़ होती है। लोग कष्ट उठाकर गंगा सागर की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल एक दिन मकर संक्रान्ति को यहाँ लोगों की अपार भीड़ होती है। इसीलिए कहा जाता है-"सारे तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।"

तमिलनाडु में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं। प्रथम दिन भोगी-पोंगल, द्वितीय दिन सूर्य-पोंगल, तृतीय दिन मडू-पोंगल अथवा केनू-पोंगल और चौथे व अन्तिम दिन कन्या-पोंगल। इस प्रकार पहले दिन कूड़ा करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है और तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिये स्नान करके खुले आँगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनायी जाती है, जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य देव को नैवेद्य चढ़ाया जाता है। उसके बाद खीर को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

असम में मकर संक्रान्ति को माघ-बिहू अथवा भोगाली-बिहू के नाम से मनाते हैं।

राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएँ अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। साथ ही महिलाएँ किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान देती हैं। इस प्रकार मकर संक्रान्ति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखती है।

मकर संक्रान्ति का महत्व

शास्त्रों के अनुसार, दक्षिणायण को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुनः प्राप्त होता है। इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है। जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ट होता है-

माघे मासे महादेवः यो दास्यति घृतकम्बलम्।

स भुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्षं प्राप्यति॥

मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गयी है। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश

धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है। यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छः-छः माह के अन्तराल पर होती है। भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। मकर संक्रान्ति से पहले सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है। इसी कारण यहाँ पर रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम होता है। किन्तु मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्ध की ओर आना शुरू हो जाता है। अतएव इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा गरमी का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अन्धकार कम होगा। अतः मकर संक्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्य शक्ति में वृद्धि होगी। ऐसा जानकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रूपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है। सामान्यतः भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियाँ चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है। इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष १४ जनवरी को ही पड़ता है।

मकर संक्रान्ति का ऐतिहासिक महत्व

ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान् भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। चूँकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अतः इस दिन को मकर संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिये मकर संक्रान्ति का ही चयन किया था। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं।





सिद्ध - साहित्य

सिद्धों ने बौद्ध धर्म की वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जनभाषा में लिखा, वो हिंदी के सिद्ध - साहित्य के सीमा में आता है। राहुल सांस्कृत्यायन ने चौरासी सिद्धों के नाम उल्लेख किया हैं, जिनमें सिद्ध सरहपा से यह साहित्य आरंभ होता हैं। इन सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुईपा, डोम्भीपा, कण्ठपा, कुक्कुरीपा हिंदी के प्रमुख सिद्ध कवि हैं।

सरहपा:- ये सरहपाद , सरोजवज्र, राहुलभद्र, आदि कई नामों से प्रख्यात हैं। जाती से ये ब्राम्हण थे। इनके रचनाकाल के विषय में सभी विद्वान एकमत नहीं हैं। राहुल जी ने इनका समय 769 ई माना है, जिससे अधिकांश विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ बताये जाते हैं। जिनमें से 'दोहाकोश' हिंदी की रचनाओं में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने पाखंड और आडम्बर का विरोध किया है। गुरु सेवा को महत्व दिया है। ये सहज भोग- मार्ग से जीव को महासुख की ओर ले जाते हैं। इनकी भाषा सरल तथा गेय हैं एवं काव्य में भावों का सहज प्रवाह मिलता है।

शबरपा:- इनका जन्म क्षत्रिय-कुल में 780 ई में हुआ था। सरहपा इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। शबरों का सा जीवन व्यतीत करने का कारण ये शबरपा कहे जाने लगे। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। ये माया मोह का विरोध करके सहज जीवन पर बल देते हैं और उसी को महासुख की प्राप्ति का मार्ग बतलाते हैं।

लुईपा:- ये राजा धर्मपाल के शासनकाल में कायस्थ परिवार में उत्पन्न हुए थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य बताया था। इनकी साधना का प्रभाव देख कर उड़ीसा के तत्कालीन राजा तथा मंत्री इनके शिष्य हो गये थे। चौरासी सिद्ध में इनका सबसे ऊंचा स्थान माना जाता हैं। उनकी कविता में रहस्य भावना की प्रधानता हैं।

डोम्भीपा :- मगध के क्षत्रिय वंश में 840 ई के लगभग इनका जन्म हुआ था। विरूपा से इन्होंने दीक्षा ली थी। इनके द्वारा रचित इक्कीस ग्रंथ बताये जाते हैं, जिनमें 'डोम्भीगीतिका', 'योगचर्या', 'अक्षरद्विकोपदेश' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।

कण्ठपा :- इनका जन्म कर्नाटक के ब्राम्हण वंश में 820 ई में हुआ था। बिहार के सोमपुरी स्थान पर ये रहते थे। जालंधरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। कई सिद्धों ने इनकी शिष्यता स्वीकार की थी। इनके लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताये जाते हैं। जिनमें अधिकांश दार्शनिक विषयों पर हैं। रहस्यात्मक भावनाओं से परिपूर्ण गीतों की रचना करके ये हिंदी की कवियों में प्रसिद्ध हुए।

कुक्कुरीपा :- इनका जन्म कपिलवस्तु के एक ब्राह्मण वंश में माना जाता है। जिनके जन्मकाल का पता नहीं चल सका है। र्चपटीया इनके गुरु थे। इनके द्वारा रचित सोलह ग्रंथ माने जाते हैं। ये भी सहज जीवन के समर्थक थे।

सस्मिता मोहान्ती

+3 प्रथम वर्ष





सूरदास

हिंदी-साहित्य में कृष्णभक्ति की अजस्र धारा को प्रभावित करनेवाले भक्त कवियों में सूरदास का स्थान मूर्धन्य है। उनका जीवनव्रत उनकी अपनी कृतियों से आंशिक रूप में और बाह्य साक्ष्य के आधार पर अधिक उपलब्ध होता है। इसके लिए 'भक्तमाल' (नाभादास), 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' (गोकुलनाथ), 'वल्लभदिग्विजय' (यदुनाथ) तथा 'निजवार्ता' का आधार लिया जाता है। श्री हरद्वारायकृत भावप्रकाशवाली 'चौरासीवैष्णवन की वार्ता' में लिखा है कि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित 'सीही' नामक गाँव में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इसके अतिरिक्त सूर के जन्मस्थान के विषय में और कोई संकेत नहीं मिला। इस वार्ता में सूर का चरित गौघाट से आरम्भ होता है, जहाँ वे वैराग्य लेने के बाद निवास करते हैं। यही श्री वल्लभचर्या से उनका साक्षत्कार हुआ था। आधिकांश विद्वान ने सीही गाँव को ही सूरदास का जन्मस्थान माना है।

सूरदास का जन्मकाल 1478 ई. स्थिर किया जाता है। उनके जन्मन्ध होने या बाद में अंधत्व प्राप्त करके विषय में अनेक किंवदंतियाँ एवम प्रवाद फैले हुए हैं। वार्ता-ग्रंथ के अनुसार 1509-10 ई. के आसपास उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभचर्या से हुई और तभी उन्होंने शिष्यत्व ग्रहण किया। आकबर से भी उनकी भेंट का उल्लेख मिलता है। वल्लभचर्या के शिष्य बनने के बाद वे चंद्रासरोवर के समीप पारसोली गाँव में रहने लगे थे वही 1583 ई. में उनका देहावसान हुआ। उनकी मृत्यु पर गो. विठलनाथ ने शोकर्त हो कर कहा था: "पृष्टिमार्ग जहाज जाता है सो जाको कुछ लेना होय सो लेओ।"

सूरदास की शिक्षा आदि के विषय में किसी ग्रंथ में कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता,

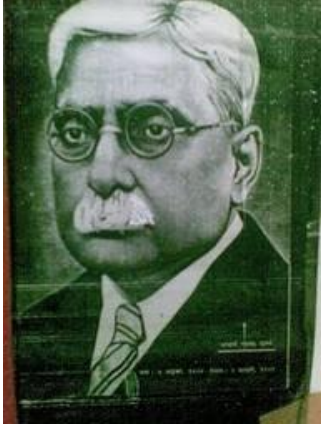
केवल इतना ही हरिराय जी ने लिखा है कि वे गांव से चार कोस दूर रह कर पद-रचना में लीन रहते थे और गानविद्य में प्रवीण थे। भक्त - मंडली उनके पद सुनने एकत्र हो जाती थी । उनके पद विनय और दैन्य भाव के होते थे, किन्तु श्री वल्लभचर्या के संपर्क में आने पर उन की प्रेरणा से सुरदास ने दास्य भाव और विनय के पद लेखना बंद कर दिया तथा सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की पद रचना करने लगे । डॉ. दीनदयाल गुप्त ने उन के द्वारा रचित पच्चीस पुस्तकों की सूचना दी है। जिनमें सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी, सुरपचीस , सुरारामयन, सुरसाठी, और राधरसकाली प्रकशित हो चुकी है।' सूरसागर 'और 'साहित्य लहरी 'ही उनकी श्रेष्ठ कृतियां है।' सूरसारावली 'को अनेक विद्वान अप्रमाणित मानते हैं ।जो इसे ' सूरसागर ' का सार अथवा उसकी विषयसूची मानकर इसकी प्रमाणिकता के पक्ष में है। 'सूरसागर ' के सुप्रसिद्ध दृष्टिकूट पदों का संग्रह है। इनमे अर्थगोपन -शैली में राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है । साथ ही अलंकार निरूपन की दृष्टि से भी इस ग्रंथ का महत्व है ।

'भागवत' पुराण को उपजीव्य मान कर उन्होंने राधाकृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन ' सूरसागर ' में किया है। सूरदास ने प्रेम और विरह के द्वारा सगुणमार्ग से कृष्ण को साध्य माना है । उनके कृष्ण सखा रूप में भी सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं । विष्णु, हरि, राम आदि सब कृष्ण ही के नाम हैं । निर्गुण ब्रह्म के ये सगुण नाम हैं और इनमें भेद-बृद्धि सूरदास को अभीष्ट नहीं । उन्होंने जहाँ रामकथा का उल्लेख किया है, वहाँ यही आशय है कि दोनों ही कृष्ण के रूप हैं; इनमें कोई भेदभाव नहीं है। प्रेमभक्ति को अपना कर उन्होंने भागवत प्रेम को ही भक्ति का मेरुदंड मान लिया और प्रेम की परिपूर्णता के लिए विरह को आवश्यक मानकर विरह को महत्व को इन शब्द को प्रकट किया:

निहारिका मिश्र

+3 (प्रथम वर्ष)





हिंदी साहित्येतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में सर्वोच्च स्थान आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'हिंदी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया तथा जिसे आगे परिवर्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया। इसके आरंभ में ही आचार्य शुक्ल ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए उद्घोषित किया है : "जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्त्वृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्त्वृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्त्वृत्ति बहुत - कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।" इस उद्घारण से स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल ने साहित्येतिहास के प्रति एक निश्चित व सुस्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास-क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि उन्होंने साहित्येतिहास को साहित्यालोचन से पृथक रूप में ग्रहण करते हुए विकासवादी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय दिया। साथ ही, उन्होंने इतिहास के मूल विषय को आरंभ करने से पूर्व ही 'काल - विभाजन' के अंतर्गत हिंदी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार सुस्पष्ट काल-खंडों में विभक्त करके अपनी योजना को ऐसी निश्चित रूप में प्रस्तुत कर दिया जिससे पाठक के मन में शंका और संदेह के

लिए कोई स्थान नहीं रह जाता । यह दूसरी बात है कि उन्होंने काल-विभाजन का आधार न दे कर केवल तत्समबन्धी निष्कर्षों की ही सूचना दी है। किंतु , इससे उस युग के उन पाठकों को अवश्य लाभ हुआ , जो कल -विभाजन भी त्रुटिपूर्ण सिद्ध हो गया है, किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं की अपनी अतिसरलता व स्पष्टता के कारण यह आज भी बहुप्रचलित और बहुमान्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास की एक अन्य विशेषता है- पूरे भक्तिकाल को चार भागों या शाखाओं में बांटकर उसे शुद्ध दार्शनिक एवं धार्मिक आधार पर प्रतिष्ठित कर देना । उन्होंने इस काल के समस्त साहित्य को पहले निर्गुण धारा और सगुण धारा में और फिर प्रत्येक को दो-दो शाखाओं - ज्ञानाश्रयी शाखा व प्रेमाश्रयी शाखा तथा रामभक्तिशाखा में विभक्त करके न केवल साहित्यिक आलोचकों के लिए, अपितु दार्शनिक तथा धार्मिक दृष्टि से सहित्यानुसन्धान करने वालों के लिए भी एक अत्यंत सरल एवं सीधा मार्ग तैयार कर दिया।

स्तुति प्रज्ञा दास, +3 प्रथम वर्ष





रानी माँ का चबूतरा

मन्नु भंडारी की कहानी रानी माँ का चबूतरा मजदूर दरिद्र स्त्री गुलाबी की कहानी है। जो वाणी की कटू, हृदय की कोमल और नीयत की साफ थी। पती उसका शराबी है। इसलिए वह उसे घर से निकाल देती है। अपनी तथा दो मासूम बच्चों को कोठरी में बंद करके मजदूरी के लिए जाती है। एक तरफ गुलाबी है। और दूसरी तरफ रानी माँ। रानी माँ ने अपने बच्चे के लिए ब्रत कर के अपने प्राण त्याग दिये हैं। उसके बच्चे को सितलामायी का प्रकोप हुआ और यह बिमारी जाने का नाम नहीं लेता था। अन्त में एक साधु ने आकर उसे उपदेश दिया कि अगर वह सात दिनों तक खाना पीना छोड़ देती हैं। उसके प्रताप से उसका बच्चा ठीक हो जाएगा। रानी माँ ने ऐसा ही किया। पहले तो रानी माँ का प्राण आँखों में आए थे उसपर सात दिन अन्न जल का त्याग है। सब ने बहुत समझाया साधू की बात में मत आओ पर वह नहीं मानी तो नहीं मानी। सात दिन बाद बच्चा तो उठ खड़ा हुआ पर रानी माँ का जीवन जाता रहा। रानी माँ स्वर्ग सिधार गई। उसने अपने बच्चे के लिए अपना बलिदान दिया। उसकी याद में उसके पति सेठ ने बगीचे में एक चबूतरा बनवाया।

रानी माँ के उस पवित्र चबूतरे पर आस पास की महिलाएं पूर्णिमा के दिन दीपक चढ़ाने जाते हैं। औरतों का मानना है, रानी माँ की आत्मा एक पवित्र आत्मा है। और आत्मा पवित्र होने के नाते उसकी स्मृति में बनाये गए चबूतरे भी पवित्र है। जो जितना रानी माँ की कथा सुनेगी ओर पढ़ेगी और पूर्णिमा के अवसर दिया जलायेगी उतना उनको पुण्य मिलेगी।

रानी माँ और गुलाबी में कोई अंतर नहीं है। गुलाबी अपने मजदूरी के काम में व्यस्त रहती है। न किसी से लेना है न देना है। वो एक दिन के लिए भी उस चबूतरा पर नहीं जाती थी। सरकारी शिशु केन्द्र खोलने पर वो भुखी रह कर कुछ पैसे जुटाती है। और अंत में अपने बच्चों के लिए परिश्रम कर संघर्षों से जूझते जूझते प्राण दे देती है।

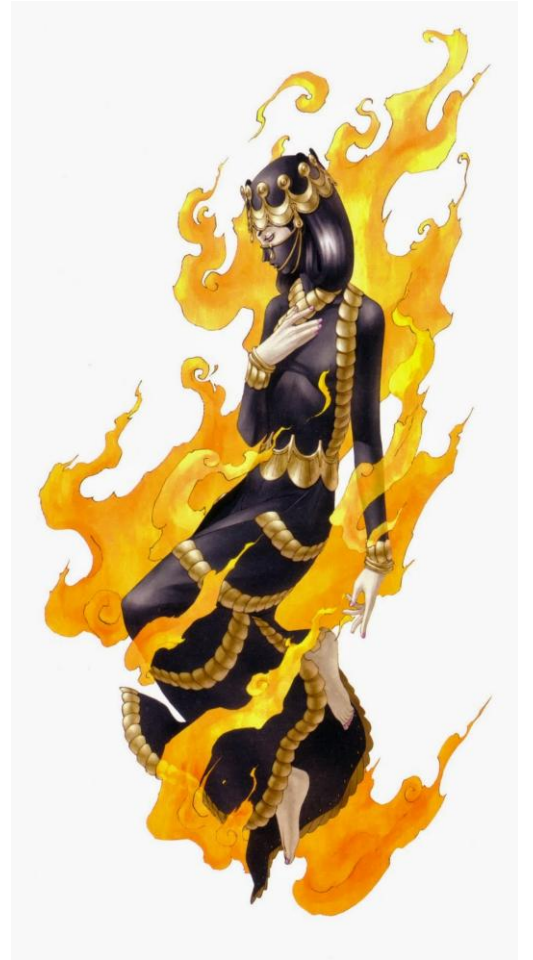
इस प्रकार कहानी में गुलाबी ओर रानी माँ के चरित्र में एक भावात्मक साम्य है। वास्तव में गुलाबी ओर रानी माँ में कोई अंतर नहीं। बल्कि गुलाबी उस रानी माँ से भी उच्च धरातल पर है। पूरी कहानी में गुलाबी का व्यक्तित्व विद्यमान है। वो यातना ओर करुणा की मूर्ति है।

परन्तु किसी की दया का पात्र बनना नहीं चाहति । स्वाभिमान पुर्वक अपनी स्थिति से वह अकेलि है। रानि माँ वैभव सम्पूर्ण थी और गुलाबी गरीब विपन्न, बस यही दोनों में अन्तर है।

सोनिया नायक, +3 द्वितीय वर्ष

अग्निपरीक्षा

समाज नहीं ये,
है एक कैदखाना
जहां मुश्किल है मेरे जैसी
हर लड़की का जीना
सांस न ले सकती कभी खुले में,
बाहर न जा सकती कभी अकेले में।
कदम कदम है बदनामी का डर,
कहीं निगल न जाए समाज रूपी अजगर।
मार न खाती,
न गालियां बरसती
पर इससे भी भयानक नजरें मुझे हैं घूरती।
परिवार देता मुझे हर बार सुरक्षा
पर वे क्या जाने इस समाज में
होती मेरी कितनी बार अग्निपरीक्षा ।



पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष

निर्गुण भक्ति का स्वरूप

ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग यह दो रूप हैं, जो विरोधी न हो कर भी परस्पर संबंध हैं । ज्ञान की अनुभूति ही भक्ति है । बिना अनुभूति का ज्ञान मात्र वाक्यज्ञान है, जिससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता है। भक्ति को मिथ्या-माया मानने वाले तथा ज्ञानमार्ग को ही एकमात्र सच्ची साधना के रूप में स्वीकार करने वाले आचार्य शंकर ने भी ज्ञान के अनुभूति पक्ष पर बल दिया है । आचार्य शंकर का मत है कि जब तक ज्ञान का अनुभव में अवसान नहीं होता तब तक वह निस्तार है ।

अवतारवाद को स्वीकार कर लेने के फलस्वरूप सगुण भक्ति को एक साकार आलंबन मिल जाता है, जिसके कारण उसे सामान्य अशिक्षित व्यक्ति भी सहज ही स्वीकार कर सकता है। निर्गुण भक्ति का आलंबन निराकार है, फलस्वरूप वह जनसाधारण के लिए ग्राह्य नहीं हो सकती । सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, किन्तु इसी आधार पर निर्गुण भक्ति की सत्ता या महत्व के विषय में संदेह नहीं किया जाना चाहिए । यह सत्य है कि निर्गुण भक्ति की ऊपर आस्था रखने वाले साधकों ने निर्गुण भक्ति को लेकर तरह-तरह के शंका उठाते हैं। उनका मूल तर्क ये है कि निर्गुण ब्रम्हज्ञान विषय तो हो सकता है, किन्तु भक्ति का नहीं।

भक्तिकाल में निर्गुण को आराध्य मान कर चलने वाली एक ओर साधना पद्धति भी दिखाई देती है, वह सूफियों की प्रेमपद्धति है।

रहस्यवाद भी निर्गुण ब्रह्म पर ही आश्रित है। निर्गुणभक्ति के आलोक में राहस्यवाद का अध्ययन करने पर उसका स्वरूप सहज ही स्पष्ट हो जाता है। यह कहा जा सकता है कि जब निर्गुण भक्ति में माधुर्य भाव का समावेश होता है, तब राहस्यवाद माधुर्य भाव की निर्गुण भक्ति ही है।

ज्ञानमार्गी निर्गुणभक्ति के अपेक्षा रहस्यवाद की अभिव्यक्ति अधिक स्थूल है, क्योंकि वह स्थूल गोचर विशिष्ट प्रतीक के माध्यम से हुई है । निर्गुणभक्ति और राहस्यवादी प्रेमपद्धति की सीमा भी वही है, जो ज्ञानमार्ग की है। निर्गुण को ही आराध्य के रूप में स्वीकार करने का परिणाम यह हुआ कि साधना की इन दोनों पद्धतियों की स्वीकृति सीमित क्षेत्र के भीतर ही रही। जब सगुणभक्ति या प्रेम को आलंबन के रूप में ग्रहण किया जा सकता है तो फिर निर्गुण की ओर आकर्षित होने का संभावना अत्यंत सीमित हो जाती है। जिस प्रकार अधिकांश व्यक्ति ज्ञानमार्ग पर नहीं चल सकते, उसी प्रकार वे निर्गुणभक्ति और राहस्यवादी प्रेमसाधना को भी स्वीकार नहीं कर सकते ।

श्रद्धांजलि भटल

+3 प्रथम वर्ष



राम काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

राम काव्य परंपरा का यद्यपि एक लंबा इतिहास है , परंतु इस परंपरा के केंद्रबिंदु हैं तुलसीदास, जो हिंदी क्वाकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र की भांति सर्वत्र अपना प्रकाश पुंज विकीर्ण कर रहे हैं। राम काव्य परंपरा में उनके ग्रंथ मिल का पत्थर सिद्ध हुए हैं । रामचरितमानस हिन्दू धर्म , संस्कृति , अचार -विचार का मापदंड बन गया है तथा यह ग्रंथ जितना लोकप्रिय हुआ है , उसकी कोई संत नहीं है । उच्च कोटि के काव्यत्व से युक्त इस ग्रंथ में मानव धर्म की अद्भुत व्यख्या की गई है ।

★ राम का स्वरूप :-

राम काव्य -परंपरा के कवियों ने भगवान विष्णु के अवतार 'राम' के जीवन - चरित्र को आधार बनाकर आपने काव्य ग्रंथों की रचना की । इन कवियों ने राम को परमब्रम्ह मान कर धर्म की स्थापना हेतु अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार ग्रहण कर मानवीय लीलाएं करते हुए दिखाया है । तुलसी ने राम के जिस स्वरूप की परिकल्पना रामचरितमानस में कई है , वह शक्ति , शील एवं सौंदर्य का भंडार है । राम के रूप में उन्होंने एक ऐसे मानवीय चरित्र को प्रस्तुत किया है , जो सबके लिए अनुकरणीय है और एक आदर्श पात्र है । तुलसी के राम लोकरक्षक हैं तथा अधर्म के विनाशक एवं धर्म के संस्थापक हैं । तुलसी के राम अपने अनंत सौंदर्य से जन - जन को मोहित करने वाले हैं साथ ही अपूर्व शील से सबके हृदय को अपने वशीभूत कर लेते हैं ।

★भक्ति का स्वरूप :-

राम भक्ति शाखा के कवियों ने राम के प्रति दास्य-भाव की भक्ति भावना प्रदर्शित की है। वे स्वयं को सेवक तथा 'राम' को अपना आराध्य मानते हैं। तुलसी की भक्ति का पद्धति बफ अनुपम है। उसमें आराध्य के प्रति श्रद्धा व प्रेम का समन्वय है तथा धर्म और ज्ञान का भी योग है। तुलसी की भक्ति नवधा भक्ति है जिसका चरम उत्कर्ष विनय पत्रिका में देखा जा सकता है। भजन, कीर्तन, नामस्मरण, गुणकथन, दैन्य, समर्पण आदि सभी तत्व तुलसी की भक्ति पद्धति में उपलब्ध हो जाते हैं। राम के प्रति अनन्यता होते हुए भी उन्होंने किसी अन्य देवी-देवता के प्रति तिरस्कार नहीं दिखाया है। साथ ही भक्ति मार्ग की महत्ता बताते हुए भी ज्ञान और कर्म की महत्ता भी प्रतिपादित की है। उनकी भक्ति वेद-शास्त्र की मर्यादा के अनुकूल है और विभिन्न मतों का सार तत्व होने से पारंपरिक होते हुए भी नवीनता लिए हुए हैं।

★नारी विषयक दृष्टिकोण :-

राम काव्य में स्थान-स्थान पर नारी के विषय में अपना दृष्टिकोण कवि ने प्रस्तुत किया है। प्रायः आलोचकों ने तुलसी के नारी विषयक दृष्टिकोण के प्रतिपूर्वाग्रह रखते हुए उन्हें नारी निंदक कर रूप में निरूपित किया है। परंतु वे यह भूल जाते हैं कि तुलसी ने सीता, पार्वती, अनुसूया जैसी नारियों के उज्ज्वल चरित्र की परिकल्पना करते हुए नारी को सती, पतिव्रता एवं त्यागमयी रूप में प्रस्तुत कर उन्हें गरिमा एवं भव्यता प्रदान की है। उन्होंने नारी के कामिनी रूप की भत्सर्ना की है, भामिनी रूप की नहीं। विलासिनी एवं कुलटा नारियों की निंदा कबीर ने भी किया है और तुलसी ने भी, परंतु उसके आधार पर यह कहना कि ये कवि नारी निंदक हैं, इनके प्रति अन्याय ही होगा। सच तो यह है कि इन्होंने निकृष्ट पुरुषों को भी निन्दनीय माना है जो काम के वशीभूत हो कर कर्तव्यच्युत हो जाते हैं। तुलसीने नारी जाति के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए एवं उसकी पराधीनता को लक्षित करते हुए एक ही पंक्ति में उसकी नियति को स्पष्ट कर दिया है -

कत विधि सृजी नारी जग मांहि । पराधीन सपनेहु सुख नहीं ।

★राम काव्य में रस योजना :-

राम काव्य का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसमें सभी रसों की योजना करने का अवसर कवियों को प्राप्त हो गया हो, परिणामतः इस काव्य में नव-रसों का पूर्ण परिपाक उपलब्ध होता ही है। भक्ति भावना की प्रधानता होने के कारण निर्वेदजन्य शांत रास को ही हम राम काव्य

का प्रधान रस स्वीकार कर सकते हैं । मर्यादावादी होने के कारण तुलसी ने शृंगार का मर्यादित चित्र ही अंकित किया है किंतु वहां जो कुछ भी है, अत्यंत शालीन एवं मधुर है ।

★छंद एवं अलंकार योजना :-

राम भक्त कवि काव्य मर्मज्ञ थे । वे काव्यशास्त्र के नियमों से बंधी हुई छंद - योजना करने में पूर्ण दमर्थ थे । यही कारण है कि तुलसी - जैसे समर्थ कवि ने किसी एक छंद में नहीं अपितु विविध छंदों में काव्य रचना की है । राम चरित मानस में दोहा , चौपाई , सोरठा , सवैया आदि छंदों का सफल प्रयोग हुआ है ।

राम काव्य परंपरा के कवि अलंकार प्रवीण थे । काव्य में अलंकारों के प्रयोग में ये सिद्धहस्त थे । यद्यपि इन्होंने चमत्कार प्रदर्शन के लिए अलंकार योजना नहीं की है परंतु उनका कए अलंकारों से मंडित है । उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा उनके प्रिय अलंकार हैं । रूपकों का जैसा विस्तृत निर्वाह तुलसी ने किया है, वैसा विरल कवि ही करने में समर्थ होते हैं । रामचरित मानस में ज्ञान - भक्ति के विवेचन में जो लंबा सांगरूपक उन्होंने प्रस्तुत किया है वह उन जैसे प्रतिभा सम्पन्न कवि की ही सामर्थ्य थी । इन कवियों की अलंकार योजना स्वाभाविक एवं अर्थ बोध में सहायक रही है ।

शुभश्री शताब्दी दास

+३प्रथम वर्ष



मीराबाई की कृष्ण भक्ति



मीराबाई के सम्बन्ध में बाह्य एवं अन्तः साक्ष्य उतना मौन अथवा अनिश्चित नहीं, जितना अन्य मध्ययुगीन महकवियों के सम्बन्ध में है। उनके स्वरचित विविध पद उनके जीवन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों तथा उनके अन्य परिणामों के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। उनके भक्तिपदों की सर्वजनमनोहारिणी रसवत्ता ने उन्हें अल्पकाल में ही इतना लोकप्रिय बना दिया कि विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न वर्गों के संतों, भक्तों, कवियों तथा रचनाकारों ने अपनी कृतियों में उनकी चर्चा कई रूपों में की है। विभिन्न भक्तमालों एवं वार्ताग्रंथों में भी मीरा संबंधी अनेक साक्ष्य प्राप्त हैं। राजपूताना के कतिपय प्रशस्तिपत्रों, अभिलेखों, दानपत्रों और कुछ प्राचीन चित्रों में भी उनके जीवन से संबंधित कई तथ्य उपलब्ध हैं। मीराबाई के मूल नाम के संबंध में भी समालोचकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से विचार किया है। कुछ विद्वान 'मीरा' का संबंध फारसी शब्द 'मीर' से जोड़ते हैं, जिसका अर्थ 'परम पुरुष' है। 'बाई' गुजरात में प्रचलित अर्थानुसार 'पत्नी' के लिए प्रयुक्त होता है। ये विद्वान 'मीराबाई' का अर्थ 'ईश्वर की पत्नी' करते हैं और इसे परवर्ती संत कवियों द्वारा दिया गया नाम मानते हैं। यह मत संगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि यदि 'मीराबाई' का अर्थ 'ईश्वर की पत्नी' लिया जाये तो मीरा के पदों में सर्वत्र प्रयुक्त 'मीरा' के प्रभु गिरधर गोपाल पद का अर्थ 'ईश्वर की पत्नी के ईश्वर ...' आदि लेना होगा, जो संगत नहीं। 'बाई' शब्द का प्रयोग

गुजरात में स्त्रियों के लिए सम्मानार्थ होता है। अतः 'मीराबाई' नाम माता-पिता द्वारा ही दिया गया मूल नाम मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

मीरा के जन्मस्थान और वंश के संबंध में कोई मतभेद नहीं है। यह मान्यता सर्वसम्मत है कि उनका जन्म 'मेड़ता' के समीपवर्ती गांव 'कुड़की' में राठौर वंश की मेड़तिया शाखा में हुआ था। इस शाखा के प्रवर्तक राव दूदा थे। मीरा उन्हीं के पुत्र राव रत्नसिंह के घर पैदा हुईं। मीरा के पिता रत्नसिंह को कुड़की समेत बारह गांवों की जागीर प्राप्त थी। किन्तु वे अधिक समय तक कुड़की में न रह पायीं, क्योंकि उनकी दो वर्ष की अवस्था में ही उनकी माता का देहांत हो गया। मीराबाई का विवाह चितौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से 1516 ई. में हुआ। दुःसंयोगवश विवाह के सात वर्ष पश्चात ही भोजराज का स्वर्गवास हो गया, जिससे मीरा अंतर्गत में विद्यमान अब तक अप्रकट अंतः संघर्ष प्रकट रूप से उनके जीवन का अंग बन गया। मीरा तत्कालीन प्रथा के अनुसार सती नहीं हुईं, क्योंकि वे स्वयं को अजर अमर स्वामी की चिरसुहागिनी मानती थीं। राजरानी मीरा का यह निश्चय मेवाड़ के राजघराने के लिए सर्वथा अप्रत्याशित था। परंतु मीरा अब तथाकथित लौकिक बंधनों से पूर्णतः मुक्त हो कर निश्चित भाव से साधु-संगति एवं भक्ति-पूजा में अपना समय व्यतीत करने लगीं। राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी विक्रमसिंह को मीरा का यह आचरण असह्य लगा। उसने मीरा को अनेक यातनाएं दीं, पर मीरा का प्रभु प्रेम अचल रहा।

कहते हैं कि कुछ समय पश्चात जयमल और उसके पिता वीरमदेव ने मीरा को मेड़ता बुला लिया, किंतु जोधपुर-नरेश मालदेव के आक्रमण के कारण वीरमदेव की स्थिति अस्थिर हो गयी। इस बीच मीराबाई पुष्करयात्रा से लौटती हुई वृन्दावन चली गयीं। वहीं इनकी भक्तिधारा माधुयोपासना के रस में समाहित हुई। वहां इनकी भेंट प्रसिद्ध कृष्णभक्त जीवगोस्वामी से हुई, जो इनकी प्रेमनिष्ठा से बड़े प्रभावित हुए। वृन्दावन में गिरधर गोपाल के गीत-गाते गाते न जाने मीरा को कब और कैसे यह आभास हुआ कि उनके नटवर नागर तो कभी के वृन्दावन छोड़ कर द्वारका जा विराजे हैं। यह आभास होते ही मीरा वहां से द्वारका चली गयीं। वहीं रणछोड़ जी के मंदिर में भगवान की मूर्ति के सम्मुख एकाग्र भाव से भजन-कीर्तन करते हुए मीरा ने शेष जीवन व्यतीत किया।

मनीषा साहू, +3 प्रथम वर्ष

बारिश की बूंदें

बारिश जो आसमान से टपकती है
बूंदें बनकर, पहाड़ों से फिसलती है।
नदियों में मचलती है,
लहरों के साथ चलती है,
कुँआँ-पोखरी में मिलती है,
झरनों में घरघराती है।
गलियों में फिरती है,
मोड़ पर सम्मिलती है।
फिर आगे निकलती है,
धरती पे पानी कहलाती है।
पानी को पाने से सबकी जिंदगी में खुशी आ जाती है।
ये सामान्य नहीं,
सबकी जरूरत बन जाती है,
मनुष्य, जीवजन्तु, पेड़-पौधों के जीवन की धारा बन जाती है।
ना समझो सामान्य इसे ये प्रलयकारी भी हो सकती है।
जीवन में समझो इसके महत्व को
इसके बिना दुनिया अचल हो जाती है।
मराठी में 'पानी', तामील में 'तानी', कन्नड़ में 'नीर' है।
ये पानी जब आँख से ढलता है तो 'आँसू' बन जाता है।
तब इसका मूल्य हिरे-मोती से भी ज्यादा हो जाता है।

श्रद्धांजलि भउल, +3 प्रथम वर्ष

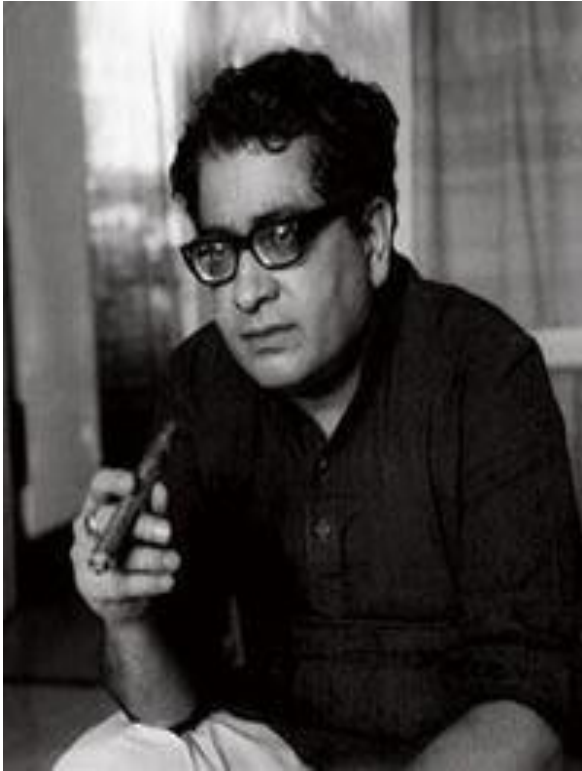


हिंदी भाषा

हम भारत वासी हैं।
हम हिंदी भाषी हैं।
हिंदी की महिमा अपार है।
इसके समान कोई न ओर है।
परन्तु आज हमारी माँ समान हिंदी को
नीची निगाहों से देखा जाता है।
मात्र अंग्रेजी को
उच्च कोटि का समझा जाता है।
सोचा जाता है जो अंग्रेजी बोले
वही बहुत बड़ा ज्ञानी हैं।
तथा हिंदी का जो मान करे।
वो सबसे बड़ा अज्ञानी हैं।
भाषाएँ सभी सामान हैं।
सब में निहित ज्ञान है।
करना सबका सम्मान
लेकिन हिंदी तो है अपनि माँ के समान।
अंत में यही कहती हूँ, हिंदी हिंदी है हमारी माँ
हिंदी का सम्मान करो।
हिंदी में बसती आत्मा भारत की
हिंदी का गुणगान करो।

कादम्बिनी पंडा, +3 द्वितीय वर्ष

मोहन राकेश



मोहन राकेश(८ जनवरी १९२५ - ३ जनवरी, १९७२) नई कहानी आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर थे।

पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी और अंग्रेज़ी में एम ए किया। जीविकोपार्जन के लिये अध्यापन। कुछ वर्षों तक 'सारिका' के संपादक। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे अधूरे' और लहरों के राजहंस के रचनाकार। 'संगीत नाटक अकादमी' से सम्मानित। ३ जनवरी १९७२ को नयी दिल्ली में आकस्मिक निधन। मोहन राकेश हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाट्य लेखक और उपन्यासकार हैं। समाज के संवेदनशील व्यक्ति और समय के प्रवाह से एक अनुभूति क्षण चुनकर उन दोनों के सार्थक सम्बन्ध को खोज निकालना, राकेश की कहानियों की विषय-वस्तु है। मोहन राकेश की डायरी हिंदी में इस विधा की सबसे सुंदर कृतियों में एक मानी जाती है।

प्रमुख कृतियाँ

- उपन्यास - अंधेरे बंद कमरे, अन्तराल, न आने वाला कल।
- नाटक - आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे।
- कहानी संग्रह - क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ।
- निबंध संग्रह - परिवेश
- अनुवाद - मृच्छकटिक, शाकुंतलम्।

मिस पाल

मोहन राकेश

वह दूर से दिखाई देती आकृति मिस पाल ही हो सकती थी।

फिर भी विश्वास करने के लिए मैंने अपना चश्मा ठीक किया। निःसन्देह, वह मिस पाल ही थी। यह तो खैर मुझे पता था कि वह उन दिनों कुल्लू में रहती हैं, पर इस तरह अचानक उनसे भेंट हो जाएगी, यह नहीं सोचा था। और उसे सामने देखकर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ कि वह स्थायी रूप से कुल्लू और मनाली के बीच उस छोटे से गांव में रही होगी। वह दिल्ली से नौकरी छोड़कर आई थी, तो लोगों ने उसके बारे में क्या-क्या नहीं सोचा था !

बस रायसन के डाकखाने के पास पहुंच कर रुक गई। मिस पाल डाकखाने के बाहर खड़ी पोस्टमास्टर से कुछ बात कर रही थीं। हाथ में वह एक थैला लिए थी। बस के रुकने पर न जाने किस बात के लिए पोस्टमास्टर को धन्यवाद देती हुई वह बस की तरफ मुड़ी। तभी मैं उतरकर सामने पहुंच गया। एक आदमी के अचानक सामने आ जाने से मिस पाल थोड़ा अचकचा गई, मगर मुझे पहचानते ही उसका चेहरा खुशी और उत्साह से खिल गया !

“रणजीत तुम ?” उसने कहा, “तुम यहां कहां से टपक पड़े ?”

“मैं इस बस से मनाली आ रहा हूं।” मैंने कहा।

“अच्छा ! मनाली तुम कब से आए हुए थे ?”

“आठ दस दिन हुए, आया था। आज वापस जा रहा हूं।”

“आज ही जा रहे हो ?” मिस पाल के चेहरे से आधा उत्साह गायब हो गया, देखो कितनी बुरी बात है कि आठ-दस दिन से तुम यहां हो और मुझसे मिलने की तुमने कोशिश भी नहीं की। तुम्हें यह तो पता ही था कि मैं कुल्लू में हूं।”

“हां, यह तो पता था, पर यह पता नहीं था कि कुल्लू के किस हिस्से में हो। अब भी तुम अचानक ही दिखायी दे गई, नहीं मुझे कहां से पता चलता कि तुम इस जंगल को आबाद कर रही हो ?”

“सचमुच बहुत बुरी बात है,” मिस पाल उलाहने के स्वर में बोली, “तुम इतने दिनों से यहां हो और मुझसे तुम्हारी भेंट आज हुई आज जाने के वक्त...”

ड्राइवर जोर-जोर से हार्न बजाने लगा। मिस पाल ने कुछ चिढ़कर ड्राइवर की तरफ देखा और एक साथ झिड़कने और क्षमा माँगने के स्वर में कहा, “बस जी एक मिनट। मैं भी इसी बस से कुल्लू चल रही हूँ।

मुझे कुल्लू की एक सीट दीजिए। थैंक यू वेरी मच !” और फिर मेरी तरफ मुड़कर बोली, “तुम इस बस से कहां तक जा रहे हो ?”

“आज तो इस बस से जोगिन्दरनगर जाऊंगा। वहां एक दिन रहकर कल सुबह आगे की बस पकड़ूंगा।” ड्राइवर अब और जोर से हार्न बजाने लगा। मिस पाल ने एक बार क्रोध और बेबसी के साथ उसकी तरफ देखा और बस के दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए बोली, “अच्छा कुल्लू तक तो हम लोगों का साथ है ही, और बात कुल्लू पहुंचकर करेंगे। मैं तो कहती हूं कि तुम दो-चार दिन यहीं रुको, फिर चले जाना।”

बस में पहले ही बहुत भीड़ थी। दो-तीन आदमी वहाँ से और चढ़ गए थे, जिससे अन्दर खड़े होने की जगह भी नहीं रही थी। मिस पाल दरवाजे के अन्दर जाने लगीं तो कण्डक्टर ने हाथ बढ़ाकर उसे रोक दिया। मैंने कण्डक्टर से बहुतेरा कहा कि अन्दर मेरी वाली जगह खाली है, मिस साहब वहां बैठ जाएंगी और मैं भीड़ में किसी तरह खड़ा होकर चला जाऊंगा, मगर कण्डक्टर एक बार जिद पर अड़ा तो अड़ा ही रहा कि और सवारी वह नहीं ले सकता। मैं अभी उससे बात ही कर रहा था कि ड्राइवर ने बस स्टार्ट कर दी। मेरा सामान बस में था, इसलिए मैं दौड़कर चलती बस पर सवार हो गया। दरवाजे से अन्दर जाते हुए मैंने एक बार मुड़कर मिस पाल की तरफ देख लिया। वह इस तरह अचकचाई-सी खड़ी थी जैसे कोई उसके हाथ से उसका सामान छीन कर भाग गया हो और उसे समझ न आ रहा हो कि उसे अब क्या करना चाहिए।

बस हल्के-हल्के मोड़ काटती कुल्लू की तरफ बढ़ने लगी। मुझे अफसोस होने लगा कि मिस पाल को बस में जगह नहीं मिली तो मैंने क्यों न अपना सामान वहां उतरवा लिया। मेरा टिकट जोगिन्दरनगर का था, पर यह जरूरी नहीं था कि उस टिकट से जोगिन्दरनगर तक जाऊं ही। मगर मिस पाल से भेंट कुछ ऐसे आकस्मिक ढंग से हुई थी और निश्चय करने के लिए समय इतना कम था कि मैं यह बात उस समय सोच भी नहीं सका था। थोड़ा-सा समय और मिलता, तो मैं जरूर कुछ देर के लिए वहां उतर जाता। उतने समय में तो मिस पाल से कुशल-समाचार भी नहीं पूछ सका था, हालांकि मन में उसके सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता थी। उसके दिल्ली छोड़ने के बाद लोग उसके बारे में जाने क्या-क्या बातें करते रहे थे। किसी का ख्याल था कि उसने कुल्लू में एक रिटायर्ड अंग्रेज़ मेजर से शादी कर ली है और मेजर ने अपने सेब के बगीचे उसके नाम कर दिए हैं। किसी की सूचना थी कि उसे वहां की सरकार की तरफ से वजीफा मिल रहा है और वह करती वरती कुछ नहीं है, बस घूमती और हवा खाती है। कुछ ऐसे लोग भी थे जिनका कहना था कि मिस पाल का दिमाग खराब हो गया है और सरकार उसे इलाज के लिए अमृतसर के पागलखाने में भेज रही है। मिस पाल एक दिन अचानक अपनी लगी हुई पांच सौ की नौकरी छोड़कर चली आई थी, उससे लोगों में उसके बारे में तरह-तरह की कहानियाँ प्रचलित थीं।

जिन दिनों मिस पाल ने त्यागपत्र दिया, मैं दिल्ली में नहीं था। लम्बी छुट्टी लेकर बाहर गया था। मिस

पाल के नौकरी छोड़ने का कारण मैं काफी हद तक जानता था। वह सूचना विभाग में हम लोगों के साथ काम करती थी और राजेन्द्रनगर में हमारे घर से दस-बारह घर छोड़कर रहती थी। दिल्ली में भी उसका जीवन काफी अकेला था, क्योंकि दफ्तर के ज्यादातर लोगों से उसका मनमुटाव था और बाहर के लोगों से वह मिलती बहुत कम थी। दफ्तर का वातावरण उसके अपने अनुकूल नहीं लगता था। वह वहां एक-एक दिन जैसे गिनकर काटती थी। उसे हर एक से शिकायत थी कि वह घटिया किस्म का आदमी है, जिसके साथ उसका बैठना नहीं हो सकता।

“ये लोग इतने ओछे और बेईमान हैं,” वह कहा करती, “इतनी छोटी और कमीनी बातें करते हैं कि मेरा इनके बीच काम करो हर वक्त दम घुटता रहता है। जाने क्यों ये लोग इतनी छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे से लड़ते हैं और अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए एक-दूसरे को कुचलने की कोशिश करते रहते हैं।” मगर उस वातावरण में उसके दुखी रहने का मुख्य कारण दूसरा था, जिसे वह मुंह से स्वीकार नहीं करती थी। लोग इस बात को जानते थे, इसलिए जान-बूझकर उसे छोड़ने के लिए कुछ-न-कुछ कहते रहते थे। बुखारिया तो रोज ही उसके रंग-रूप पर कोई न कोई टिप्पड़ी कर देता था।

‘क्या बात है मिस पाल, आज रंग बहुत निखर रहा है !’

दूसरी तरफ वह जोरावरसिंह बात जोड़ देता, “आजकल मिस पाल पहले से स्लिम भी तो हो रही है।” मिस पाल इन संकेतों से बुरी तरह से परेशान हो उठती और कई बार ऐसे मौके पर कमरे से उठकर चली जाती। उसकी पोशाक पर भी लोग तरह-तरह की टिप्पणियां करते रहते थे। वह शायद अपने मुटापे की क्षतिपूर्ति के लिए बाल छोटे कटवाती थी और बनावसिंगार से चिढ़ होने पर भी रोज काफी समय मेकअप पर खर्च करती थी। मगर दफ्तर में दाखिल होते ही उसे किसी न किसी मुंह से ऐसी बात सुनने को मिल जाती थी, “मिस पाल, नई कमीज की डिजाइन बहुत अच्छा है। आज तो गजब ढा रही हो तुम !”

मिस पाल को इस तरह की बातें दिल में चुभ जाती थीं। जितनी देर दफ्तर में रहती, उसका चेहरा गंभीर बना रहता। जब पांच बजते, तो वह इस तरह अपनी मेज से उठती जैसे कोई सजा भोगने के बाद उसे छुट्टी मिली हो। दफ्तर से उठकर वह सीधी अपने घर चली जाती और अगले दिन सुबह दफ्तर के लिए निकलने तक वहीं रहती। दफ्तर के लोगों से तंग आ जाने की वजह से ही वह और लोगों से भी मेल-जोल नहीं रखना चाहती थी। मेरा घर पास होने की वजह से, या शायद इसलिए कि दफ्तर के लोगों में मैं ही ऐसा था जिसने उसे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया था, वह कभी शाम को हमारे यहां चली आती थी। मैं अपनी बूआ के पास रहता था और मिस पाल मेरी बूआ और उनकी लड़कियों से काफी घुल-मिल गई थी। कई बार घर के कामों में वह उनका हाथ बंटा देती थी। किसी दिन हम उसके यहां चले जाते थे। वह घर में समय बिताने के लिए संगीत और चित्रकला का अभ्यास करती थी। हम लोग पहुंचे तो उसके कमरे

मैं सितार की आवाज आ रही होती या वह रंग और कूचियां लिए किसी तश्वीर में उलझी होती।

मगर जब वह उन दोनों में कोई भी काम न कर रही होती तो अपने तख्त पर बिछे मुलायम गद्दे पर दो तकियों के बीच लेटी छत को ताक रही होती। उसके गद्दे पर जो झीना रेशमी कपड़ा बिछा रहता था, उसे देखकर मुझे बहुत चिढ़ होती थी। मन करता था कि उसे खींचकर बाहर फेंक दूं। उसके कमरे में सितार, तबला रंग, कैनवस, तस्वीरें कपड़े तथा नहाने और चाय बनाने का सामान इस तरह उलझे-बिखरे रहते थे कि बैठने के लिए कुर्सियों का उद्धार करना एक समस्या हो जाती थी। कभी मुझे उसके झीने रेशमी कपड़े वाले तख्त पर बैठना पड़ जाता तो मुझे मन में बहुत परेशानी होती। मन करता कि जितनी जल्दी हो सके उठ जाऊं। मिस पाल अपने कमरे के चारों तरफ खोज कर कहां से एक चायदानी और तीन-चार टूटी प्यालियां निकाल लेतीं और हम लोगों को 'फर्स्ट क्लास बोहिमियन कॉफी' पिलाने की तैयारी करने लगती। कभी वह हम लोगों को अपनी बनाई तस्वीरें दिखाती और हम तीनों—मैं और मेरी दो बहनें—अपना अज्ञान छिपाने के लिए उसकी प्रशंसा कर देते मगर कई बार वह हमसे उदास मिलती और ठीक ढंग से बात भी न करती। मेरी बहनें ऐसे मौके पर उससे चिढ़ जातीं और कहतीं कि वे उसके यहां फिर न आएंगी। मगर मुझे ऐसे अवसर पर मिस पाल से ज़्यादा सहानुभूति होती।

आखिरी बार जब मैं मिस पाल के यहां गया, मैंने उसे बहुत ही उदास देखा था। मेरा उन दिनों एपेंडसाइटिस का आपरेशन हुआ था और मैं कई दिन अस्पताल में रहकर आया था। मिस पाल उन दिनों रोज अस्पताल में खबर पूछने आती रही थी। बूआ अस्पताल में मेरे पास रहती थी पर खाने-पीने का सामान इकट्ठा करना उनके लिए मुश्किल था मिस पाल सुबह-सुबह आकर सब्जियां और दूध दे जाती थी। जिस दिन मैं उसके यहां गया, उससे एक ही दिन पहले मुझे अस्पताल से छुट्टी मिली थी और मैं अभी काफी कमजोर था। फिर भी उसने मेरे लिए जो तकलीफ उठाई थी, उसके लिए मैं उसे धन्यवाद देना चाहती थी।

मिस पाल ने दफ्तर से छुट्टी ले रखी थी और कमरा बन्द किए अपने गद्दे पर लेटी थी मुझे पता लगा कि शायद वह सुबह से नहाई भी नहीं है।

“क्या बात है, मिस पाल ? तबीयत तो ठीक है ?” मैंने पूछा।

“तबीयत ठीक है”, उसने कहा, “मगर मैं नौकरी छोड़ने की सोच रही हूं।”

“क्यों ? कोई खास बात हुई है क्या ?”

“नहीं, खास बात क्या होगी ? बात बस इतनी ही है मैं ऐसे लोगों के बीच कामकर ही नहीं सकती मैं सोच रही हूं कि दूर के किसी खूबसूरत-से पहाड़ी इलाके में चली जाऊं और वहां रहकर संगीत और चित्रकला का ठीक से अभ्यास करूं। मुझे लगता है, मैं खामखाह यहां अपनी जिन्दगी बरबाद कर रही हूं। मेरी समझ में

नहीं आता कि इस तरह की जिन्दगी जीने का आखिर मतलब क्या है ? सुबह उठती हूँ, दफ्तर चली जाती हूँ। वहाँ सात-आठ घंटे खराब करती हूँ, खाना खाती हूँ सो जाती हूँ। यह सारा का सारा सिलसिला मुझे बिलकुल बेमानी लगता है। मैं सोचती हूँ कि मेरी जरूरतें ही कितनी हैं ? मैं कहीं और जाकर एक छोटा-सा कमरा या शैक लूँ तो थोड़ा-सा जरूरत का सामान अपने पास रखकर पचास-साठ या सौ रुपये में गुजारा कर सकती हूँ। यहाँ मैं जो पांच सो लेती हूँ, वे पांच के पांच सौ हर महीने खर्च हो जाते हैं। किस तरह खर्च हो जाते हैं, यह खुद मेरी समझ में नहीं आता। पर अगर जिन्दगी इसी तरह चलती है, तो क्यों खामखाह दफ्तर आने-जाने का भार ढोती रहूँ ? बाहर रहने में कम से कम अपनी स्वतन्त्रता होगी। मेरे पास कुछ रुपये पहले के हैं, मुझे प्राविडेंट फंड के मिल जाएंगे। इतने में एक छोटी सी जगह पर मेरा काफी दिन गुजारा हो सकता है। मैं ऐसी जगह रहना चाहती हूँ जहाँ यहाँ की-ही गन्दगी न हो और लोग इस तरह की छोटी हरकतें न करते हों। ठीक से जीने के लिए इन्सान को कम से कम इतना तो महसूस होना चाहिए कि उसके आसपास का वातावरण उजला और साफ है, और वह एक मेंढक की तरह गंदले पानी में नहीं जी रहा।”

“मगर तुम यह कैसे कह सकती हो कि जहाँ तुम जाकर रहोगी, वहाँ हर चीज़ वैसी ही होगी जैसी तुम चाहती हो ? मैं तो समझता हूँ कि इन्सान जहाँ भी चला जाए, अच्छी और बुरी तरह की चीज़ें उसे अपने आसपास मिलेंगी ही। तुम यहाँ के वातावरण से घबराकर कहीं और जाती हो, तो यह कैसे कहा जा सका है कि वहाँ का वातावरण भी तुम्हें ऐसा ही नहीं लगेगा ? इसलिए मेरे खयाल से नौकरी छोड़ने की बात तुम गलत सोचती हो। तुम यहीं रहो और अपना संगीत और चित्रकला का अभ्यास करती रहो। लोग जैसी बातें करते हैं करने दो।”





स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द (जन्म: १२ जनवरी, १८६३ - मृत्यु: ४ जुलाई, १९०२) वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् १८९३ में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुआत "मेरे अमरीकी भाइयो एवं बहनों" के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली परिवार में जन्मे विवेकानंद आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीव स्वयं परमात्मा का ही एक अवतार हैं; इसलिए मानव जाति की सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानंद ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का पहले हाथ ज्ञान हासिल किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए कूच की। विवेकानंद के संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धांतों का प्रसार किया , सैकड़ों सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में, विवेकानंद को एक

देशभक्त संत के रूप में माना जाता है और इनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म १२ जनवरी सन् १८६३ (विद्वानों के अनुसार मकर संक्रान्ति संवत् १९२०) को कलकत्ता में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे। दुर्गाचरण दत्ता, (नरेंद्र के दादा) संस्कृत और फारसी के विद्वान थे उन्होंने अपने परिवार को 25 की उम्र में छोड़ दिया और एक साधु बन गए। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थीं। उनका अधिकांश समय भगवान शिव की पूजा-अर्चना में व्यतीत होता था। नरेंद्र के पिता और उनकी माँ के धार्मिक, प्रगतिशील व तर्कसंगत रवैया ने उनकी सोच और व्यक्तित्व को आकार देने में मदद की।

बचपन से ही नरेन्द्र अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के तो थे ही नटखट भी थे। अपने साथी बच्चों के साथ वे खूब शरारत करते और मौका मिलने पर अपने अध्यापकों के साथ भी शरारत करने से नहीं चूकते थे। उनके घर में नियमपूर्वक रोज पूजा-पाठ होता था धार्मिक प्रवृत्ति की होने के कारण माता भुवनेश्वरी देवी को पुराण, रामायण, महाभारत आदि की कथा सुनने का बहुत शौक था। कथावाचक बराबर इनके घर आते रहते थे। नियमित रूप से भजन-कीर्तन भी होता रहता था। परिवार के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के प्रभाव से बालक नरेन्द्र के मन में बचपन से ही धर्म एवं अध्यात्म के संस्कार गहरे होते गये। माता-पिता के संस्कारों और धार्मिक वातावरण के कारण बालक के मन में बचपन से ही ईश्वर को जानने और उसे प्राप्त करने की लालसा दिखायी देने लगी थी। ईश्वर के बारे में जानने की उत्सुकता में कभी-कभी वे ऐसे प्रश्न पूछ बैठते थे कि इनके माता-पिता और कथावाचक पण्डितजी तक चक्कर में पड़ जाते थे।

शिक्षा

सन् 1871 में, आठ साल की उम्र में, नरेंद्रनाथ ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में दाखिला लिया जहाँ वे स्कूल गए। 1877 में उनका परिवार रायपुर चला गया। 1879 में, कलकत्ता में अपने परिवार की वापसी के बाद, वह एकमात्र छात्र थे जिन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज प्रवेश परीक्षा में प्रथम डिवीजन अंक प्राप्त किये।

वे दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य सहित विषयों के एक उत्साही पाठक थे। इनकी वेद, उपनिषद्, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू शास्त्रों में गहन रुचि थी। नरेंद्र को भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित किया गया था, और ये नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम में व खेलों में भाग लिया करते थे। नरेंद्र ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन जनरल असेंबली इंस्टिट्यूशन (अब स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में किया। 1881 में इन्होंने ललित कला की परीक्षा उत्तीर्ण की, और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी कर ली।

नरेंद्र ने डेविड ह्यूम, इमैनुएल कांट, जोहान गोटलिब फिच, बारूक स्पिनोज़ा, जोर्ज डब्लू एच हेजेल, आर्थर स्कूपइन्हार, ऑगस्ट कॉम्टे, जॉन स्टुअर्ट मिल और चार्ल्स डार्विन के कामों का अध्ययन किया। उन्होंने स्पेंसर की किताब एजुकेशन (1861) का बंगाली में अनुवाद किया। ये हर्बर्ट स्पेंसर के विकासवाद से काफी मोहित थे। पश्चिम दार्शनिकों के अध्ययन के साथ ही इन्होंने संस्कृत ग्रंथों और बंगाली साहित्य को भी सीखा। विलियम हेस्टी (महासभा संस्था के प्रिंसिपल) ने लिखा, "नरेंद्र वास्तव में एक जीनियस है। मैंने काफी विस्तृत और बड़े इलाकों में यात्रा की है लेकिन उनकी जैसी प्रतिभा वाला का एक भी बालक कहीं नहीं देखा यहाँ तक की जर्मन विश्वविद्यालयों के दार्शनिक छात्रों में भी नहीं।" अनेक बार इन्हें श्रुतिधर (विलक्षण स्मृति वाला एक व्यक्ति) भी कहा गया है।

आध्यात्मिक शिक्षता - ब्रह्म समाज का प्रभाव

1880 में नरेंद्र, ईसाई से हिन्दू धर्म में रामकृष्ण के प्रभाव से परिवर्तित केशव चंद्र सेन की नव विधान में शामिल हुए, नरेंद्र 1884 से पहले कुछ बिंदु पर, एक फ्री मसोनरी लॉज और साधारण ब्रह्म समाज जो ब्रह्म समाज का ही एक अलग गुट था और जो केशव चंद्र सेन और देवेन्द्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में था। 1881-1884 के दौरान ये सेन्स बैंड ऑफ़ होप में भी सक्रीय रहे जो धूम्रपान और शराब पीने से युवाओं को हतोत्साहित करता था।

यह नरेंद्र के परिवेश के कारण पश्चिमी आध्यात्मिकता के साथ परिचित हो गया था। उनके प्रारंभिक विश्वासों को ब्रह्म समाज ने जो एक निराकार ईश्वर में विश्वास और मूर्ति पूजा का प्रतिवाद करता था, ने प्रभावित किया और सुव्यवस्थित, युक्तिसंगत, अद्वैतवादी अवधारणाओं, धर्मशास्त्र, वेदांत और उपनिषदों के एक चयनात्मक और आधुनिक ढंग से अध्ययन पर प्रोत्साहित किया।

निष्ठा

एक बार किसी शिष्य ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और निष्क्रियता दिखाते हुए नाक-भों सिकोड़ी। यह देखकर विवेकानन्द को क्रोध आ गया। वे अपने उस गुरु भाई को सेवा का पाठ पढ़ाते और गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर फेंकते थे। गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को समझ सके और स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके। और आगे चलकर समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक भण्डार की महक फैला सके। ऐसी थी उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा जिसका परिणाम सारे संसार ने देखा। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। उनके गुरुदेव का शरीर अत्यन्त रुग्ण हो गया था। गुरुदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुम्ब की नाजुक हालत व स्वयं के भोजन की चिन्ता किये बिना वे गुरु की सेवा में सतत संलग्न रहे।

विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों को इसी रूप में रखा। अध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना भी यह कहा जा सकता है कि समता के सिद्धान्त का जो आधार विवेकानन्द ने दिया उससे सबल बौद्धिक आधार शायद ही ढूँढा जा सके। विवेकानन्द को युवकों से बड़ी आशाएँ थीं। आज के युवकों के लिये इस ओजस्वी सन्यासी का जीवन एक आदर्श है। उनके नाना जी का नाम श्री नंदलाल बसु था।

सम्मलेन भाषण

मेरे अमरीकी भाइयो और बहनो!

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ; धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ; और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रचारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृत- दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मान कर स्वीकार करते हैं। मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में उन यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट को स्थान दिया था जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने महान जरथुष्ट जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाईयो मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ जिसकी आवृत्ति मैं बचपन से कर रहा हूँ और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं:

रुचीनां वैचित्र्याद्भुजकुटिलनानापथजुषाम्। नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

अर्थात् जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है स्वतः ही गीता के इस अद्भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत के प्रति उसकी घोषणा करती है:

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

अर्थात् जो कोई मेरी ओर आता है-चाहे किसी प्रकार से हो-मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में मेरी ही ओर आते हैं।

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी हैं। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं व उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को ध्वस्त करती हुई पूरे के पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि ये वीभत्स दानवी शक्तियाँ न होती तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं

अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया है और मैं आन्तरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टा ध्वनि हुई है वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होनेवाले सभी उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारस्परिक कटुता का मृत्यु निनाद सिद्ध हो।



स्वामी विवेकानन्द शिकागो के विश्व धर्म परिषद् में बैठे हुए

विवेकानन्द का योगदान तथा महत्व

उन्तालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में स्वामी विवेकानन्द जो काम कर गये वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो, अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और उसे सार्वभौमिक पहचान दिलवायी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था-"यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

रोमां रोलां ने उनके बारे में कहा था-"उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असम्भव है, वे जहाँ भी गये, सर्वप्रथम ही रहे। हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता था। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देख ठिठक कर रुक गया और आश्चर्यपूर्वक चिल्ला उठा-'शिव!' यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।"

वे केवल सन्त ही नहीं, एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव-प्रेमी भी थे। अमेरिका से लौटकर उन्होंने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था-"नया भारत निकल पड़े

मोची की दुकान से, भड़भूँजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से; निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।" और जनता ने स्वामीजी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। गान्धीजी को आजादी की लड़ाई में जो जन-समर्थन मिला, वह विवेकानन्द के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के भी एक प्रमुख प्रेरणा-स्रोत बने। उनका विश्वास था कि पवित्र भारतवर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्यभूमि है। यहीं बड़े-बड़े महात्माओं व ऋषियों का जन्म हुआ, यही संन्यास एवं त्याग की भूमि है तथा यहीं-केवल यहीं-आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य के लिये जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। उनके कथन-"उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ। अपने नर-जन्म को सफल करो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।"

मृत्यु

विवेकानन्द ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यानों की प्रसिद्धि विश्व भर में है। जीवन के अन्तिम दिन उन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या की और कहा-"एक और विवेकानन्द चाहिये, यह समझने के लिये कि इस विवेकानन्द ने अब तक क्या किया है।" उनके शिष्यों के अनुसार जीवन के अन्तिम दिन ४ जुलाई १९०२ को भी उन्होंने अपनी ध्यान करने की दिनचर्या को नहीं बदला और प्रातः दो तीन घण्टे ध्यान किया और ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मरन्ध्र को भेदकर महासमाधि ले ली। बेलूर में गंगा तट पर चन्दन की चिता पर उनकी अंत्येष्टि की गयी। इसी गंगा तट के दूसरी ओर उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का सोलह वर्ष पूर्व अन्तिम संस्कार हुआ था।

विवेकानन्द का शिक्षा-दर्शन

स्वामी विवेकानन्द मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोधी थे, क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। स्वामी विवेकानन्द ने प्रचलित शिक्षा को 'निषेधात्मक शिक्षा' की संज्ञा देते हुए कहा है कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो, पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?

अतः स्वामीजी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है, जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में,

तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।

स्वामी जी शिक्षा द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं। लौकिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि 'हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बने।' पारलौकिक दृष्टि से उन्होंने कहा है कि 'शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'





घर से दूर

हमारे समाज में अक्सर कहा जाता है कि लड़किया घर छोड़ के जाती हैं। पर जरा सोचिए जो लड़के नौकरी करने के लिए अपना घर अपने दोस्त अपना परिवार छोड़ कर जाते हैं। उन पर क्या बीतती है, मैं इस सोच को आप तक पहुंचाना चाहती हूँ।

जो तकिए के बिना सोने से भी कतराते थे। आके देखिए वो आज कहीं पर भी सो जाते हैं। खाने में जो सो नखरे करने वाले अब कुछ भी खा लेते हैं। जो अपने कमरे में किसी को ना आने देने वाले अब तक ही बिस्तर में सब के साथ एडजेस्ट हो जाते हैं।

लड़के भी घर छोड़ जाते हैं।

घर को Miss करते हैं पर कहते है कि मैं ठीक हूँ।

सौ - सौ ख्वाहिशें रखने वाले कहते हैं कि नहीं अब कुछ नहीं चाहिए।

पैसे कमाने की चकर में वो घर से अजनबी हो जाते हैं।

लड़के भी घर घर छोड़ जाते हैं।

बना - बनाया खाने वाले अब वो खाना खुद हि बनाते हैं। माँ, बहन, बीबी के हाथों का अब कहां खा पाते हैं।

कभी थके घर आते हैं तो भी ऐसे ही सो जाते हैं।

लड़के भी घर छोड़ जाते हैं।

मुहल्ले कि गलियां जाने पहचाने रास्ते जहां दौड़ा करते थे। अपनो के बास्ते माँ, बाप का प्यार, दोस्तों का प्यार सब पीछे छोड़ जाते हैं।

तन्हाई में करके याद अक्सर लड़के भी रोया करते हैं।

बेटे भी घर छोड़ जाते हैं।

जब नई नबेलि दुल्हन जान से भी प्यार माँ, बाप, भाई, बहन, चाचा, चाची सब को पीछे छोड़ आते हैं। सहाब मत पूछो इनका दर्द वो कैसे छिपाते हैं।

बेटे हो या बेटियां दोनों घर छोड़ जाते हैं।

शांति, +3 द्वितीय वर्ष

वर्ष 2017 की महत्वपूर्ण घटनायें

- 2 जनवरी-परमाणु सक्षम अग्नि - मिसाइल सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया
- 25-26 जनवरी - हिमस्खलन और हिमपात से हिमपात जम्मू और कश्मीर में 15 सैनिकों सहित 20 लोग मारे गए। बचाव अभियान चलाया गया।
- 1 फरवरी - 2017-18 के लिए धन बजट - 18 लोक सभा में अरुण जेटली द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस बजट में 92 वर्षीय रेलवे बजट मर्ज कर दिया गया है।
- उत्तर प्रदेश, पंजाब, मणिपुर, उत्तराखंड और गोवा में विधानसभा चुनाव 4 फरवरी से 8 मार्च तक हुए।
- 15 फरवरी- पीएसएलवी-सी 37 रॉकेट पर आईएसरोकलाइन्च किया गया जिसमें सात देशों से 104 उपग्रह रिकॉर्ड किए गए।
- 6 मार्च-भारत नौसेना की सबसे पुरानी सेवा वाहक आईएनएस विराट डीकॉम अपनी सेवा के 30 वर्षों के बाद मिशन से अवकाश
- 7 मार्च - आईएसआईएस ने भोपाल-उज्जैन पैसेंजर ट्रेन में कम तीव्रता विस्फोट की योजना बनाई।
- 11 मार्च - पांच राज्यों में विधायी चुनाव का चुनाव परिणाम चयन आयोग द्वारा घोषित किया गया।
- 14 मार्च - मनोहर परिकर ने गोवा के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली
- 15 मार्च - बिरेन सिंह ने मणिपुर के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।
- 16 मार्च- अमरिंदर सिंह ने पंजाब के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।
- 18 मार्च- आदित्यनाथ योगी ने पूरे प्रदेश के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।
- 17 जून- कोच्चि मेट्रो का उद्घाटन।
- 19 जून- भाजपा ने राष्ट्रपति चुनाव के लिए राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में रामनाथ कोविंद की घोषणा की।

- 23 जून - इसरो 31 उपग्रहों को पीएसएलवी सी -38 के माध्यम से दूसरे देशों से 29 उपग्रहों को सफलतापूर्वक रखता है।

- 1 जुलाई- भारत में सामान और सेवा कर लंघन स्वतंत्रता के 70 वर्षों में भारत का सबसे बड़ा कर सुधार, जून 2017 की आधी रात को लांच किया गया था।

- 17 जुलाई-भारत के राष्ट्रपति चुनाव का आयोजन किया गया।

17 जुलाई- भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए ने वेंकै नायडू को उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए अपने उम्मीदवार के रूप में घोषित किया।

- 20 जुलाई- रामनाथ कोविंद ने मारीया कुमार के खिलाफ 65.65% वोट के साथ 2017 भारतीय राष्ट्रपति चुनाव जीता, विपक्ष के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार

- 25 जुलाई - रामनाथ कोविंद ने भारत राष्ट्रपति पद की शपथ ली।

- 7 अगस्त-केरल हाईकोर्ट ने क्रिकेटर श्रीसंत पर जीवन समय पर लगा प्रतिबंध हटा दिया।

- 11 अगस्त- वेंकैया नायडू ने भारत के 13 वें उपाध्यक्ष के रूप में शपथ ली।

- 15 अगस्त- राष्ट्र ने 71 वें स्वतंत्रता दिवस मनाया।

- 22 अगस्त - सर्वोच्च न्यायालय ने तत्काल ट्रिपल तालाक पर प्रतिबंध लगाकर इसे असंवैधानिक करार दिया। केंद्र सरकार ने ट्रिपल तालाक के लिए संसद में कानून पारित करने का निर्देश दिया

- 25 अगस्त - बलात्कार के मामले में गुरुमीत राम रहिम सिंहवतन पंजाब में प्रिय साचा सौदा के अनुयायियों द्वारा हिंसा की ओर जाता है, हरियाणा 38 की मौत, 300 घायल सेना से बाहर, कफर्यू पंजाब, पंचकुला, चंडीगढ़ में लगा।

- 28 अगस्त - दीपक मिश्र ने भारत के 45 वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली।

- तीन राज्यों के चार विधानसभा सीटों के चुनाव परिणाम के द्वारा घोषित चुनाव आयोग। आम आदमी पार्टी ने जीत हासिल की, भाजपा ने गोवा के पैन्जी और वल्पाई, और आंध्र प्रदेश में टीडीपी ने चुनाव जीते।

- निर्मला सीतारामन भारत की रक्षा मंत्री बने।

- 5 सितंबर- 9 ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और म्यांमार के लिए द्विपक्षीय बातचीत के लिए चीन की यात्रा पर नरेंद्र मोदी। लखनऊ मेट्रो का उद्घाटन किया।
- 10 अक्टूबर-भाजपा ग्राम पंचायत चुनावों में महाराष्ट्र के लिए सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरा।
- 18 नवंबर- मानुषी छिल्हर ने मिस वर्ल्ड का मुकुट जीता।
- 29 नवंबर- हैदराबाद मेट्रो का उद्घाटन।
- 11 दिसंबर - जम्मू और कश्मीर में गोरेज़ सेक्टर में हिमस्खलन के रूप में गायब हुए 5 सैनिक
- 13 दिसंबर - रोहित शर्मा ने श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय मैचों में तीसरे डबल शतक लगाया।

खबर में

- पाउंड और ब्रेक्सिट में 20% की गिरावट के कारण नई अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक निधि रिपोर्ट के मुताबिक, 2017 में भारतीय अर्थव्यवस्था के संयुक्त राज्य अर्थव्यवस्था को पार करने की उम्मीद है। इस प्रकार भारत दुनिया की छठी सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था बन जाएगा

जीएसएटी -7 ए सैन्य संचार, जीएसएटी -9 मल्टी ब्रांड संचार, जीएसएटी -11 जीओएसटी -11 जीओस्टेशनरी कम्युनिकेशन उपग्रहों ने इसरो द्वारा शुरू किया।

- इसरो ने जीएसएटी -17 और जीएसएटी -19 ई संचार उपग्रहों का शुभारंभ किया।
- 2017 तक भारतीय वायु सेना एस -400 ट्राइम्फ मिसाइल प्रणाली मिल सकती है।
- दुनिया भर में सभी भाषाओं में 2000 करोड़ रुपये से अधिक की कुल राशि वाली दंगल पहली भारतीय फिल्म बन गई है।

खेल

अंतर्राष्ट्रीय आयोजन

- 2-8 जनवरी - चेन्नई ओपन चेन्नई में आयोजित किया जाएगा।
- 24-29 जनवरी- लखनऊ में सैयद मोदी अंतर्राष्ट्रीय ग्रां प्री गोल्ड का आयोजन

- 16 - 19 फरवरी - भारत ओपन स्क्वैश नई दिल्ली में हुआ।
- 19 -26 फरवरी - भारत ने 2017 एशियाई शीतकालीन खेलों में भाग लिया
- 6 - 28 अक्टूबर - फीफा यू -17 विश्व कप निर्धारित है। इंग्लैंड ने फाइनल में स्पेन को 5-2 से हराकर पहला खिताब जीता
- 5 अक्टूबर - भारत ने जापान में फाइनल में 5-4 से हराकर जापान में आयोजित 2017 हॉकी महिला एशिया कप जीता।
- 1 नवंबर - भारतीय क्रिकेट टीम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ अपनी पहली टी 20 जीत नई दिल्ली में दर्ज की।
- 30 नवंबर - संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप में मिराबाई चानू ने स्वर्ण पदक जीता।
- 1 - 10 दिसंबर - 2016 - 17 पुरुषों की एफआईएच हॉकी वर्ल्ड लीग फाइनल भुवनेश्वर, भारत में हुई।
- भारत ने कांस्य पदक जीता

लिज़ालिन परिडा, +3 प्रथम वर्ष
रितुपर्णा पलई, +3 प्रथम वर्ष



यादों के गलियारों से



राज्यस्तरीय संगोष्ठी में भागीदारी

महाविद्यालय द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में
भाग लेती विभाग की छात्रायें



दिसंबर की ठंड में सूरज से दोस्ती



धन्यवाद